॥ श्री गुरुदेव प्रसन्न ॥

श्री संत जैरामदास उर्फ लहरीबाबा

लिखित

लहरी सुपथ दर्शन

हिंन्दी भजन

किमत : ४–५० रुपये

॥ श्री गुरुदेव प्रसन्न ॥

श्री संत जैरामदास उर्फ लहरीबाबा

लिखित

"लहरी सुपथ दर्शन"

हिन्दी भजन

किमत : ४–५० रुपये

प्रकाशक :

श्री संत जैरामदास उर्फ लहरी महाराज

प्रबंधक :

लहरी आश्रम

मु. पो. कामठा,

ता. गोंदिया, जि. भंडारा (महाराष्ट्र)

●

द्वितीय आवृत्ति– २०००

●

सर्वाधिकार प्रकाशक के स्वाधीन

●

पुस्तक मिलने का स्थान :

श्री संत जैरामदास उर्फ लहरी महाराज

लहरी आश्रम, मु. पो. कामठा

ता. गोंदिया, जि. भंडारा (महाराष्ट्र)

●

मुद्रक :

दिपक कृ. भागवत

भागवत प्रिंटिंग प्रेस, भिवापूर– ४४१ २०१

श्री संत जैरामदास उर्फ लहरीबाबा

कामठा

ॐ

आश्रम : कामठा

त. गोंदिया जि. भंडारा (महाराष्ट्र)

जन्म तारीख

७-१२-१९२२

संदेश

आज के इस युग में मनुष्य ने भौतिक जींवन को ही सबकुछ मान लिया है। परिणाम स्वरुप मात्र अधिकाधिक शारिरिक सुखों की प्राप्ति ही उसके जीवन का लक्ष्य बन गया है और छूंकि इन सुखों कीं प्राप्ति के लिए धन की आवश्यकता भी होती है, । मनुष्य का उद्देश भी अधिक से अधिक धन की प्राप्ति मात्र ही बन गया है। अधिक से अधिक धन प्राप्त कर, अधिक से अधिक आराम और विलास से रहना यही आज मानव जीवन का अर्थ हो गया है। जीवन के इस विकृत अर्थ के परिणाम स्वरुप ही आज मानव समाज में स्वार्थ, ईर्षा, द्वेष, काम, क्रोध, लोभ, अहंकार, छल, कपट, वासना, व्यभिचार और भ्रष्टाचार आदि असुरी प्रवृत्तियों का बाहुल्य हो, नीति, नियम, मर्यादा, सत्यता, दया, क्षमा, शांति, बंधुभाव आदि मानवीय गुणों का ऱ्हास हो रहा है। फल स्वरुप मानव जीवन भी अशांत दु:खी और संघर्ष मय होते जा रहा है।

इसका एक मुख्य कारण यह है की उसने, मानव जीवन का सही अर्थ सिखानेवाले, उसे मानव तथा मानवता के सही अर्थ का ज्ञान करानेवाले, उसे नर से नारायण बनानेवाले ज्ञान – "अध्यात्म ज्ञान" को भुला दिया है। अध्यात्म ज्ञान के अज्ञान तथा भौतिक ज्ञान के अहंकार के परिणाम स्वरुप वह ईश्वर, जीव, आत्मा और परमात्मा जैसे सूक्ष्म और चेतन तत्वों कों भूलकर, मात्र अपने, इस जड और नाशवान शरीर पर ही केन्द्रित हो गया है। शारिरिक सुख और विलास के चक्कर में वह अच्छे और बुरे कर्मों का भेद भूलकर, मानवता के अर्थ को ही भुला बैठा है। यही कारण है कि समाज में आज, स्वार्थ, ईर्षा, द्वेष, असत्यता, वासना, व्यभिचार, और भ्रष्टाचार आदि का अधिक्य हो रहा है।

किन्तु हमारे साधु संतो और ऋषिमुनियों ने सृष्टि के इन सूक्ष्म और चेतन तत्वों का, स्वानूभव से ज्ञान प्राप्त कर ही, सृष्टि के जीवन मरण के चक्र के रहस्य का ज्ञान भी प्राप्त किया है। उनका यही ज्ञान हमारी संकृति का प्राचीनतम् ज्ञान 'अध्यात्म ज्ञान' है।

अपने स्वानुभवों के आधार पर ही उन्होंने शरीर में जीव और "आत्मा" जैसे सुक्ष्म और चेतन तत्वों के अस्तित्व को जाननें के पश्चात ही, मानव जीवन का उद्देश्य इस 'जीव' का उद्धार माना है और यह तभी संभव है जब वह अपनी आत्मा को पहिचान कर ईश्वर की प्राप्ति कर ले, किन्तु इसके लिए मनुष्य को सबसे पहले सच्चे अर्थों में मानव के कर्म, सत्यकर्मं करने होते है। अपने सत्य कर्मो से ही वह अपनी आत्मा की पहिचान कर, ईश्वर की प्राप्ति कर सकता है।

आज के इस युग में जबकि मनुष्य अपने कर्मो को भूल रहा है उसे " अध्यात्म ज्ञान " की और भी अधिक आवश्यकता जान पडती है। यही ज्ञान उसे जीवन का सही मार्ग दिखा, मानव समाज को पतन के गर्त में गिरने से बचा सकता है। इस ज्ञान की प्राप्ति के लिए ही हमें संतो के सतसंग की आवश्यकता होती है। सतसंग से मनुष्य के मन पर शुद्ध और पवित्र संस्कार हो, उसके भ्रम दूर हो, ईश्वर के प्रति उसकी भावना दृढ होने लगती है। और तब वह स्वयम् ही सत्यकर्मो की ओर प्रवृत्त होने लगता है। मनुष्य इस प्रकार जब अच्छे और बुरे कर्मो का भेद जानकर, अच्छे कर्मो की ओर प्रवृत्त होगा तभी वह सुख शांतिमय मानव समाज का निर्माण भी कर सकेगा। तभी वह सच्चे अर्थो में मानव कहलाने का अधिकारी हो सकेगा।

जैरामदास

सूची

भ. क्र.	भजन	पृष्ठ क्र.
	प्रार्थना	१
१	वन्दनम् सन्तम् सुंदरम्	२
२	बिगरी मे साथ देवे	२
३	जिन्दगी के सफर मे	३
४	तेरी दृष्टि जाये न कहा	४
५	तेरी जाये जहा तक दृष्टि	४
६	निर्धार वत्ती हो मन की	५
७	शास्त्र आधारित नही	६
८	आजारे ऽऽऽ घनश्यामा	७
९	तन जाये धन जाये	८
१०	भडक रही मानव मे ईर्षा	८
११	सुकर्मी की राहो पर	९
१२	तुम करते आये हो गद्दारी	१०
१३	बोलने का अधिकार है	१०
१४	पेट के फिकर ने किया है	११
१५	न्याय धर्म को ना जहा मिले	१२
१६	जिसका धर्मं निती पर ध्यान	१३
१७	लोगी सरीखे भटकते रहना	१३
१८	कहदो मुहपे साफ साफ	१४
१९	तन के अंदर बैठा पंछी	१५
२०	करे समाज देश का हित	१५
२१	कबसे खडा हु तेरे वो राही	१६
२२	गरीब करे अमीरो की कदर	१६
२३	तरसस अंखियां हो गयी बावली	१७

भ. क्र.	भजन	पृठ क्र
२४	सही बात सही बात	१८
२५	भाईचारा तेरे काम मे आये	१८
२६	गर्व रहे जब तन धन गुण	१९
२७	धन द्रव्य का दिखाता बल	२०
२८	कर्म के नीति नियम	२१
२९	ले नाम का सहारा	२१
३०	किसान मेरा भोला भाला	२२
३१	मेरा साथी ईमानदार	२३
३२	सच्चा न्याय ही तीर्थ करे	२३
३३	बदले जैसा जमाना	२४
३४	परिश्रम से सब कुछ मिले	२५
३५	कर्तव्य पर अपने रखता	२६
३६	आज करे कष्ट, तो मिले सुख	२६
३७	दुखिया कीं बतियाँ. कौन सुन पाये	२७
३८	साधू कहलावे वेश भुषा से	२८
३९	आज देश को सही जरुरत है	२९
४०	जाग उठो नवजवानो	३०
४१	मानव आत्मा तेरा मीत है	३१
४२	गरीबों का धन श्रम की कमाई	३२
४३	आज हमे पुरानी रुढियाँ	३३
४४	जिस गाँव मे होती है फुट	३३
४५	माथे पे चन्दन है	३४
४६	सच्चे को है मेरा साथ	३५
४७	वादे का बन्धन है, सत्य का काम	३६

ॐ

लहरी सुपथ दर्शन

(हिन्दी भजन)

प्रार्थना

जिस जिस ठिकाने मन जाये मेरा ।
वहां वहां देखूं मै स्वरुप तेरा ।।

मस्तक रखूं मै अपना जहाँ पर ।
सतगुरु कृपा मिले वहाँ पर ।।

ऐसी ही बुद्धि दीजिये स्वामी ।
जीवों से प्रीति में होवे न कमी ।।

ना मांगू तुझसे मै धन और सम्पदा ।
चरणों का दास रहूँ मै सदा ।।

अर्ज मेरी यह स्वीकार करना ।
गुरुवर मेरे हृदय में बसना ।।

जैराम कहे प्यास मेरी बुझादो ।
डगमगती ज्योति विलीन करा दो ।।

भजन क्र. १ (तर्ज- सत्यम् शिवम् सुंदरम्)

वन्दनम् सन्तम् सुन्दरम्, टूटे भव बन्धन।
आत्मा सत्य है, उसमें तथ्य है, असत्य माया है ॥ टेक ॥

ज्ञान धूल ऽऽऽ सहज लगे, भ्रम मिटे मनका।
संत की महिमा अगाध, मूढ को ज्ञानी बनावे ॥
उत्तम सतसंग है ॥ १ ॥

पारस लोहा ऽऽऽ सोना बनावे, भाव एक ना आये।
बूंद बिना, सागर प्यासा, अधूरा कहलाये।
सिद्धम योगी है ॥ २ ॥

रेख के ऊपर ऽऽऽ संत मेक है, संकट पलमे टाले।
कोई उनके, शरण में जावे, आप सम कर लेवे ॥
जैराम का मत है ॥ ३ ॥

भजन क्र. २ (तर्ज- चल उठ रे मुकुन्दा)

बिगरी में साथ देवे, वोही सज्जन कहलावे।
वही दीन दुखियों का, रक्षक सच्चा होवे ॥ टेक ॥

घिसे तन रात दिन, अपना ही सबको माना ॥
दूजा न किसे जाना, ऐसा है वो दीवाना ॥
पर दुःख ही रे पीना, उसमें आनंद मनावे ॥ १ ॥

जलन न रखे किसीकी, देखे प्रभु की झाँकी।
संतान ईश्वर के, फुलवारी वो मालीं की ॥
बलिहारी कर्ता की, जीवन सभी को देवे ॥ २ ॥

नदी, नाले और झरने, सागर को जाके मिलते ।
भेद सारे भुल जाते, समरुद कहलाते ।।
महा पुरुषों के ये गुण, विराट स्वरुप पावे ।। ३ ।।

आत्मा से प्रीत जोडी, छूटा भ्रम तेरा मेरा ।
विश्व ही घर मेरा, यही निज स्यरुप हमारा ।।
जैराम सत्य पथ पर, सच्चिदानन्द पावे ।। ४ ।।

भजन क्र. ३ (तर्ज– शाम तेरी बंसी पुकारे)

जिन्दगी के सफर में, खडे है लोभ काम ।
ढलती जाये उमरिया, कही ना विश्राम ।। टेक ।।

सुख दुख हरदम जीवन को गेरे ।
मानव हरदम खाये हिचकोले ।।
कही ना मिले शांति, बिना हरिनाम ।। १ ।।

आशा तृष्णा अपना रंग जमावे ।
मन बुद्धि चित्त यहाँ सदा डगमगावे ।।
वासना की लहरों में होवे बेफाम ।। २ ।।

पेट की ज्वाला नित्य बढती जावे ।
इच्छायें मन की कभी तप्त ना होवे ।।
घेर लिया चिन्ता ने सुबह और शाम ।। ३ ।।

जैरामदास कहे जिस कारण हम आये ।
जो करना था हमें, वो कर ना पाये ।।
बीच भंवर अडी नैया, कैसे मिले धाम ।। ४ ।।

भजन क्र. ४ (तर्ज- कशी जाऊ मी वृंदावना)

तेंरी दृष्टि न जाये जहाँ।
नित्य रमते जा तूरे वहाँ ॥ टेक ॥

चन्द्र सूर्य जहाँ ये ढले।
उसके परे ये शांति मिले ॥
चिन्मय ज्योति प्रकाश जहाँ ॥ १ ॥

आस तन की न जब तक छूटे।
तब तक मन की न भ्रांति मिटे ॥
तेरें जीवन में सुख है कहाँ ॥ २ ॥

लाखों शास्त्रों का पठन किया।
अपना आप न तूने पाया ॥
ब्रम्हज्ञानी अधूरा रहा ॥ ३ ॥

लक्ष्य से अलक्ष्य में जावे।
निराकारी भजन गावे ॥
दिखे सद्गुरु जहाँ तहाँ ॥ ४ ॥

अजपाजप जो नित्य जपे।
जन्म मत्यु के फेरे चुके ॥
जैराम पद निर्वाण तहाँ ॥ ५ ॥

भजन क्र. ५ (तर्ज- कशी जाऊं मी वृंदावना)

तेरी जाये जहाँ तक दृष्टि।
वैसीं दिखे रे तुझको सृष्टि ॥ टेक ॥

चर्म चक्षु से जो तू देखे ॥
नाशवान् वो पुतले रखे ॥
तब तक जीवन में कष्ट ही ॥ १ ॥

सीमित क्षेत्र है विश्व सारा ।
बना जड चेतन का ये घेरा ॥
हंस बुद्धि से पार किश्ती ॥ २ ॥

चांद सूरज और तारे ।
नभमें चमके फिरभी अधूरे ॥
उसके परे है गुरु बस्ती । ३ ॥

अन्तर आतमा से अनुभव मिले ।
जबद्वार वहाँ का खुले ॥
होवे लहरों की ब्रम्हा वृष्टि ॥ ४ ॥

संत बोल सीमा के परे ।
कौन माप तौल रे करे ॥
वेद शास्त्र झुके सरस्वती ॥ ५ ॥

जैराम अनहद का वो व्यापारी ।
निजधन की गठरी धरी ॥
परखे मिले अनमोल मोतीं ॥ ६ ॥

भजन क्र. ६ (तर्ज- ऐसा प्यार बहावे मैय्या)

निर्धार वृत्ति हो मन की भावना अन्तर मे शिवकी ।
बानी चले तब आतम ज्ञान की, ब्रम्हा बेला मुक्ति की ॥ टेक ॥

जीव का ये भेद मिटे, सोहम् सोहम् हंसा रटे ।
भेद अज्ञान पल मे छूटे, स्फूर्ति स्फुरण वहाँ उठे ॥
बुद्धि ज्ञान विवेक जगावे, सुध बुध भूले वो तन की ॥ १ ॥

लागे लगन वो पिय मिलन की, नैनों मे वों धुन्ध भरी।
फीकी लगे ये दुनियाँ सारी, एक ही वस्तु लगे प्यारी।
खान पान ये कुछ न सुहावे, गठरी लूटे निजधन की ॥ २ ॥

हो गया वो ऐसा मतवाला, पीये ब्रम्हरस प्याला।
सबमें रहकर रहे निराला, जगमें रहकर निराला ॥
जग समझे उसको पगला, मूढ क्या उसके मर्म को जाने ॥
अनमोल वाणी संतो की ॥ ३ ॥

कहता जैराम गुरु कृपाबिन जीवन सारा अंधियारा।
नैया अडी खिवैया बिन, कैसे होवे भवपारा।
सतसंग बिन उद्धार न जीव का, तृप्ति ना होवे मन की ॥४॥

भजन क्र· ७ [तर्ज– तेरे प्यार का आसरा]

शास्त्र आधारित नहीं, संतो का ज्ञान।
आत्मा से निकले शब्द रुपी बाण ॥ टेक ॥

अज्ञान अंधकार को क्षण में मिटाये।
मति मंद मूढ को आप सम बनाये ॥
ऐसे उनके विशेष है गुण ॥ १ ॥

मति उनकी रहती सदा ब्रम्हलीन।
मान अपमान मे नही उनका ध्यान ॥
धुंद नयन से पागल समान ॥ २ ॥

जन हित में ही अपना हित समझे।
उसमें ही अपनी उपरिया बिताते ॥
जीवन मरण का तनिक नही भान ॥ ३ ॥

नित्य नूतन सदा सत्य वाणी ।
अधूरे रहे वेद पंडीत महामुनी ॥
चन्द्र सूर्य वहाँ होवे लोपमान ॥ ४ ॥

जैरामदास कहे विश्व रचयिता ।
देश और समाज के ये ही है विधाता ॥
उनके ही बलपर–उद्धारे जीवन ॥ ५ ॥

भजन क्र. ८ (तर्ज- आजारे ऽ ऽ ऽ परदेशी)

आजारे ऽ ऽ ऽ घनश्यामा,
मेरी नैया अडी मजधार ।
तुम बिन कौन करे उस पार ॥ टेक ॥

तुम संग मेरी जनम कीं जोडी ।
कैसे भूले हो तुम गिरधारी ॥
तरसत नैन ये दर्शन उभरे ॥ १ ॥

अंधे के नैनो की ज्योति ।
दुखियों के तुम्ही हो साथी ॥
बेसहारे के तुम्ही सहारे ऽ ऽ ऽ ॥ २ ॥

अंजाना राही हूँ भटका ।
जहाँ वहाँ ही आये खटका ॥
खिसके हिम्मत पल पल में रे ॥ ३ ॥

जैरामदास चहुँ ओर निहारे ।
आकर मोरी प्यास बुझारे ॥
निर्धन के तुम हो रखवारे ॥ ४ ॥

भजन क्र. ९ (तर्ज– राधा ना बोले रे)

तन जाये धन जाये, पत ना जाये रे ।
सत् की लक्ष्मी फिर लौट आये रे ॥ टेक ॥

जीवन में कितने ही ठोकरे खाये ।
अपने वादे वो निभाते रहे ॥
सच्चाई कभी ना छोडे रे ॥ १ ॥

सूखी रोटी खाकर गुजारा करे ।
किसीके धन पर नजर न धरे ॥
मुफ्त न किसीका खायेरे ॥ २ ॥

नित्य रहे संत सहारे ऽऽऽ सहारे ।
उसमें ही सारी उमरिया बिताये ॥
परहित अपना कहेरे ॥ ३ ॥

कहता है जैराम सत्य ही शोभा ।
हरी नाम बिना चले न जुबाँ ॥
लग जाये नैय्या किनारे ॥ ४ ॥

भजन क्र. १० (तर्ज– तन मन से गाऊंगा तेरा भजन)

भडक रही मानव में ईर्षा जलन ।
देखें न नीति धरम, हो रहा पतन ॥ टेक ॥

अपने ही स्वार्थं के गाल बजावे ।
किसी के बातों पर ध्यान न देवे ॥
खोटे नीति की है, रहन सहन ॥ १ ॥

फुकट में पेट भरे, कष्ट कर न पाये।
लम्बी चौडी बातों में, लोगों को फसावे ॥
हडप नीति की, रखता चलन ॥ २ ॥

मान मर्यादा का रहा ना ठिकाना।
जहाँ तहाँ ये ही चल रहा हंगामा ॥
समझ में न आये क्या होगा वतन ॥ ३ ॥

फूट की दरारे बढती ही जाये।
काला बाजार सर पर मंडराये ॥
जैराम कहे दानव से, घबराये सज्जन ॥ ४ ॥

भजन क्र. ११

सुकर्मी की राहों पर खडे है राम विधाता।
हर पल पल में उसको, शांति धैर्य वो देता ॥ टेक ॥

टाले नहीं वो उसकी बातें, वक्त पे दौडकर आये।
जब भक्तों की पुकार सुनी, करूणा उनकी लिये ॥
श्रद्धा भाव हो दिल में, उसी से निभावे नाता ॥ १ ॥

निर्मल मन हो गंगा जैसे, प्रीत भरी हो दया से।
द्वेश नहीं हो किसी जीव से, चिढ करे अन्याय से ॥
अपना ही सबको माना, वोही नर प्रभु को भाता ॥ २ ॥

हित अनहित को जिसने जाना, पद पाये निर्वाना।
जन्म मरण का छूटे रोना, मस्त बना दिवाना ॥
इस दुनियाँ की उलझन से, कभी वो सम्बन्ध न रखता ॥ ३ ॥

कहे जैराम जन्म लेकर, प्रपंच अपना साधे ।
कभी न आये कहीं पर बाँधे, निभाये अपने वादे ॥
परमार्थं कीं राहों पर आये ना कभी विपदा ॥ ४ ॥

भजन क्र. १२ (तर्ज– शहीदों के खू का असर)

तुम करते आये हो हमसे गद्दारी ।
वो छुपी नहीं है बाते तुम्हारी ॥ टेक ॥

कब तक सहेंगे जालिमों की बातें ।
कब तक डरेंगे हम इन पाजियों से ॥
भडक रही दिलकी, ज्वाला हमारी ॥ १ ॥

प्रम से समझाने का प्रयास किया ।
कोई ना असर उन पर भया ।
हरदम हमसे, की है गद्दारी ॥ २ ॥

किसी का हमने न, फुकट का खाया ।
परिश्रम से हमने, सब कुछ जमाया ।
फिर भी हमसे तुम करते सिरजोरी ॥ ३ ॥

सच की बाते, सत् होकरं रहेगी
तुम्हारी ये झूठी वाणीं, तुमको निगलेगी ॥
कहे जैराम ईश्वर के घर नहीं देरी ॥ ४ ॥

भजन क्र. १३ (तर्जं– मेरा दिल ओ साजवां)

बोलने का अधिकार है जिसको ।
प्रेम देने का अधिकार है उसको ॥ टेक ॥

पीर पराई जगी हो जिसमें – आये सबके हित में ।
फंसे है जो अज्ञानता में, ज्ञान जगाये उनमें ॥
धर्म की बेला बचाने को ॥ १ ॥

अन्याय की चिढ रखे वो – सतपथपर चलने को ।
देश समाज की उन्नति होवे, फिक्र यही है उसको ॥
मान अपमान न छुवे कभी उसको ॥ २ ॥

रखकर चित्त परहित में ही, अपना परिचय देवे ।
त्याग की वृति मन में धरकर, किसीसे कुछ ना लेवे ॥
स्वप्नों में न देखा परधन को ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे ऐसे नर के जुबां मे अमृत भरा ।
आप तरे दूजे को तारे – जीवनका उजियारा ॥
हरियाली दिलाये समाज को ॥ ४ ॥

भजन क्र. १४ (तर्ज- दुनिया में हम आये है तो जीना ही पडेगा)

पेट के फिकर ने किया है परेशान ।
अच्छे बुरे का रहा नहीं थोडा भी ध्यान ॥ टेक ॥

आशा की तृष्णा बुझ न पाई सारे जीवन में ।
काम क्रोध की अग्नि भडक रही है बदन में ॥
मन ये भटक रहा है जग में पर्वन के समान ॥ १ ॥

लोभ नित्य नये नये करिश्मे ये दिखावे ।
चश्मेंनूर मोहिनीं के जाल में ये फँसाये ॥
जीवन यें अधूरा रहे मृग तृष्णा के समान ॥ २ ॥

ये देश है बिराना मंजिल है बडी दूर।
राहों के क्रूर प्राणी कर रहे है मजबूर ॥
खतरे की घंटी से संभल, पद पाना है निर्वाण ॥ ३ ॥

जैराम कहे इस घेरे से बिरला ही बच सका।
संत की शरण में जो गया बही तर सका ॥
नादानी छोडकर तू गुरुवाणी को पहिचान ॥ ४ ॥

भजन क्र. १५ (तर्ज- शहिदो के खूं का असर देख लेना)

न्याय धर्म को ना जहाँ मिले शांति।
कब भडक जावेगी, वहाँ रे क्रांति ॥ टेक ॥

अन्याय का जहाँ रहे बोलबाला।
कब किसका घुंट जायेगा गला ॥
सच्चे को फँसाये कूटनीति । १ ॥

फूट की दरारे वहाँ बढ जाती।
जीवन की कलियाँ वहाँ मुर्झा जाती ॥
दैविक असुरों की होवे हाथापाई । २ ।

मानवता को नही है ठिकाना।
दानवता का जहाँ तहाँ गाना ॥
देश समाज की वहाँ नहीं उन्नति ॥ ३ ॥

कहे जैराम सत्पुरुष विना, ना ये टले।
ज्ञानसे उनके पथ सत् पर चले ॥
भाईचारा की तुम जोडो प्रीति ॥ ४ ॥

भजन क्र. १६ (तर्ज– तेरे पूजन को भगवान)

जिसका धर्म नीति पर ध्यान ।
उसका रहा जगत में मान ॥ टेक ॥

गरीब होवे या धनवान जुबाँ में होवे उसके तत्थ ।
वोही मानव मूल्यवान ॥ १ ॥

सत् पथ पर ही हरदम चलता ।
अपने प्रण को निभाते रहता ॥
अमीर है रे उसका ज्ञान ॥ २ ॥

झूठ न बोले कभी स्वप्नों में ।
सत्य को रखा अपने हृदय में ॥
खाली न जावे उसका बाण ॥ ३ ॥

कहे जैराम धन का गुमान ।
उसको पल में मिटी शान ॥
रावण हुआ रें निःसन्तान ॥ ४ ॥

भजन क्र. १७ (तर्ज– ये दिन और उनकी निगाहों के साये

लोगों सरीखे भटकते रहना ।
अपना हित खोना, अज्ञानता में रोना ॥ टेक ॥

नरतन पाकर इस दुनियाँ में ।
उमर गमाया माया झमेले में ॥
भाये ना दिल को, पशु जैसा जीना ॥ १ ॥

पूर्व पुण्य से, समय, अनमोल पाये ।
हरि भजन बिन, श्वास क्यों खोये ॥
सत् की डगर हमें है रे पाना ॥ २ ।

जिन्दगी दो दिनकी, करे क्यों मनमानी ।
आनाकानी में रे होवेगी हानि ।
छोडकर नादानी पियाको है मिलना । ३ ॥

देश है बिराना, मारे क्यों ताना ।
एक दिन छोडके हमको है जाना ॥
चलेगा न तेरा कहीं पर बहाना ॥ ४ ॥

जैरामदास कहे, हरी मेरी सबर ।
बिगडी बनी कीं लेवे वोही खबर ।
क्या दुनियाँ से मेरा लेना देना ॥ ५ ॥

भजन क्र. १८ (तर्ज– मन साफ तेरा है की नही)

कहदो मुंहपे साफ साफ, दिल में रखोना पाप ।
मिटेंगे भ्रम सारे तेरे, रहे ना त्रिताप ॥ टेके ॥

उज्वल मन बनते जावे, श्रद्धा भाव आये ।
निरामय होवे बुद्धि ज्ञान को पावे ॥
अपने में अपना देखो, दूजा नहीं ख्वाब ॥ १ ॥

सब जग तेरा तूही, खाली नहीं कहीं ।
जैसा तू है वैसा वही, मानले सही ॥
दरपन में मुखडा देख तू, यही है इन्साफ ॥ २ ॥

जैरामदास कहे रे बाबा, व्यर्थ ना तू डोल।
छल कपट दिल में रखकर, मीठा ना तू बोल॥
खुल जायेगी पोल तेरी, रोयेगा तू आप ॥ ३ ॥

भजन क्र. १९ (तर्ज– मन भूला भूला फिरे जगत में)

तन के अंदर बैठा पंछी कब उड जायेरे ॥ टेक ॥

क्षण घडी का नही भरोसा, पल पल खोयेरे॥
माया नगरी बंदीवास में भूला जायेरे ॥ १ ॥

दो दिन का मेहमान यहाँ का, फिर होवे बिराना।
पड जायेगा पिंजडा सूना, क्या गत होवे रे ॥ २ ॥

आग लगत रे होवे होली मट्टी में मिले रे।
पांच तत्व ये पांच में मिले अदृष्य होवे रे ॥ ३ ॥

नाम को ये काल न खाये, जो निशदिन भजता रे।
कहता जैराम गुरू शरण बिना, रहे अधूरा रे ॥ ४ ॥

भजन क्र. २० (तर्ज– तब से तुने बंसरी बजाई रे)

करे समाज देश का हित – परधन से प्रीत की रे
तेरी ये बुराई ॥ टेक ॥

ऊपर से तू रंग चढाया, मन का मैल न धोया।
छल कपट में खोई उमरिया, हित की ना देखी डगरियाँ ॥ १ ॥

धर्म के नाम का नारा लगाये, बगला मछली खाये।
जाने क्या ये मर्म भोले – भ्रम जाल की तेरी बतियाँ ॥ २ ॥

राम नाम ये मुख से गाये, कर्म करे वो गंदे।
हित परहित तेरे न सधे, उन्नति कैसे कर पाये ॥ ३ ॥

कहे जैराम जितना करना – उतना ही बतलाओ।
आप जगे दूजे को जगाये – यही मानवता है बैया ॥ ४ ॥

भजन क्र. २१ (तर्ज- तबसे तुने बंसरी बजाई रे)

कबसे खडा हुँ तेरे वो राही – अंखियाँ बेचैन हुई ओरे
ओ कन्हाई ॥ टक ॥

चलत चलत मेरे थक गये पैंया – क्षीण हुई मेरी काया।
पल पल में ये खिसके हिम्मत – धीरज की करदे दया ॥ १ ॥

डगमग डोले मन चित्त बुद्धि – तूफान माया आँधी।
ज्ञान की ना चले कुछ भी – तडपत रहे ये जिया ॥ २ ॥

तू ही है एक सबका दाता – सब जीवोंका विधाता।
तेरे दर्शन बिन सब है दुखियाँ, दर्शन दे दो साबरियाँ ॥ ३ ॥

जैरामदास आस लगायें – पार करन ये नैया।
तेरे बिन दूजा कोई ना खिवैया – राधा के वो रमैया ॥ ४ ॥

भजन क्र. २२ (तर्ज- जशोमती मैय्या से बोले नंदलाला)

गरीब करे अमीरों की कदर।
वो ना सुने उनकी उजर ॥ टेक ॥

टाले न कभी उनका बोल, बाणी।
सेवा करत बीते जिन्दगानी ऽ ऽ ऽ ॥
दौडकर जाये सुबह और शाम ॥ १ ॥

आये मुसीबत देवे न साथ ।
टाल बटोले की करे ये बात ऽ ऽ ऽ ॥
दु:ख भरी करुणा ये समझे न पीर ॥ २ ॥

दर दर की ये ठोकरे खायें ।
अमीरो के मुंह देखते रहे ऽ ऽ ऽ
बदन पर न चिन्दी मिले तन हुवा जर्जर ॥ ३ ॥

आकाश की छत्रछाया पृथ्वी का बिछौना ।
जीवन मुसीबत का, नाजुक जिन्दगानी ऽ ऽ ऽ
छोडे न हिम्मत देवे कौन आधार ॥ ४ ॥

जैरामददास कहें - क्या कोई देगा साथ ।
सुनेगा क्या इनकी करुणा की बात ऽ ऽ ऽ ॥
करे प्रभु उनकी, हमेशा कदर ॥ ५ ॥

भजन क्र. २३ (तर्ज- जशोमति मैय्या से बोले)

तरसत अंखियाँ हो गई बावली ।
दर्शन बिना उमर बीत चली ॥ टेक ॥

चहुँ ओर देखूं कहाँ मिले साँवरा ।
मन तडपे मेरा हो गया बावला ऽ ऽ ऽ ॥
सूझे नही काम धंधा, तन की सुध भूली ॥ १ ॥

भाए नही खान पान, भाये नही कही मन ।
दिल में लगी लगन, सुनने को मुरली ऽ ऽ ऽ
पति बिन जेसे पत्नि–श्रृंगार खाली ॥ २ ॥

मूरत बिना मंदिर सूना ।
प्रभु बिना भक्त का जीना ऽ ऽ ऽ ।।
वैसे ही मेरे हाल, जल बिन मछली ।। ३ ।।

जैरामदास कहे, जग ये अंधियारा ।
अंधे को जैसे लाठी का सहारा ऽ ऽ ऽ ।।
नैया का खिवैया श्याम मेरा वाली ।। ४ ।।

भजन क्र. २४ (तर्ज– साईनाथ तेरे हजारो हाथ)

सही बात सही बात ।
सही बात तेरे हरदम साथ ।
जिसने इसको आजमाया, डोरी श्याम की मीरा हाथ ।।टेंक।।

बस होकर काम किया, टाले न कभी उसकी बतीया ।
द्रौपदी को चीर पुराया, ऐसे है अनाथो के नाथ ।। १ ।।

पकडे मर्यादा का रास्ता, उनपर रहते प्रभुजी फिदा ।
करूणा प्रेम श्रद्धा भावना, नम्रता का बने साथ ।। २ ।।

सुनते जा अच्छी बात, भगवान है तेरे साथ ।
तेरे तूही है रे साथी, छोडदे झूठी बकवास ।। ३ ।।

जैरामदास कहें रे भाई, चेतना है तू चेत जारे ।
स्वरुप नगीना परखलेरे, धरकर चल संतो की बात ।। ४ ।।

भजन क्र. २५ (तर्ज– साईनाथ तेरे हजारो हाथ)

भाईचारा तेरे काम मे आयें ।
जिस जिसने इसको निभाया ।
नाम अमर किया ।। टेक ।।

रही ना द्वेश भावना, करे जीव की सराहना ।
हित स्वहित का गाये गाना, जड जीवोंका उद्धार किया ।।१।।

धर्म नीति का बना वो कट्टर, अनीति से लेवे टक्कर ।
मरने जीने की नही है फिकर, सत्य को हरदम अजमाया ।। २ ।।

विश्वरूप एक माना, नाना पंथ उसमें ही गिना ।
सोंना एक जेवर नाना, ऐसी समदृष्टि हुआ ।। ३ ।।

जैरामदास कहे रे प्राणी, नीति नियम से करो जिन्दगानी ।
हार कहीं पर उसने न जानी, जनम सफल किया ।। ४ ।।

भजन क्र. २६ [तर्ज- गुरु कृपा कही खरीदी]

गर्व रहे जब तन धन गुण का ।
उद्धार न होवे जीवन का ।। टेक ।।

काम क्रोध लोभ दंभ ये भरे ।
तब तक दिखे तेरे मेरे ।।
मन भौरा ये फेरा फिरे ।
मार्ग न मिले भक्ति का ।। १ ।।

पढे किताब पंडित कहलाये ।
मर्म न जाने आतम का ।।
जब तक ये अनुभव न पाये ।
रहा न वो घर घाट का ।। २ ।।

परखा नही वो गुरु नाम को ।
मिले न ठिकाना शांति का ।।
बिन सतसंग, गुरु कृपा न होवे ।
पालन न किया गुरु वचनों का ।। ३ ।।

जैरामदास कहे रे भाई ।

दया धरम रखले मन में ।।

मुखडा देखले तू दर्पण में ।

दास बने गुरू चरणों का ।। ४ ।।

भजन क्र. २७

धन द्रव्य का दिखाता बल ।

दीन गरीबो से करता है छल ।। टेक ।।

पाप पुण्य का बिचार न करे,

आये दिल में वैसा चले ।

अपनी डींग हाकते रहे,

सच झूठ का रखे न डर ।। १ ।।

व्यवहार तेरा शैतान जैसा,

देखे जहाँ तहाँ पैसा पैसा ।

याद रख तू मेरे भाई,

शान मिटेगी एक पल ।। २ ।।

पूर्व पुण्य से धनवान बना ।

उसको तूने नहीं पहिचाना ।

जब आयेगी मुसीबत की बारी ।

रोयेगा तू हाथ मल मल ।। ३ ।।

बीते दिन की याद करके ।

क्या किया प्रभु मैने पाप ।

कैसी मुसीबत आई मुझपर ।

मिल रहा मुझको ऐसा फल ।। ४ ।।

जैरामदास कहे रे मूरख ।
बदला न किसी का चूक पाया ।
करनी का फल वो मिल जाये ।
भोगेगा तू नर्क का फल ॥ ५ ॥

भजन क्र. २८ (तर्ज– गोरी तेरा गाँव बडा प्यारा)

कर्म के नीति नियम बनाले ।
धर्म से प्रीति जोडले, सुख देखले ।
फिर कोई न तुझको भूले ।
वाणी को अजमाले, भाग्य खुले ॥ टेक ॥

मर्यादा का धरले रास्ता, फले फूले भक्ति बेला ।
दिल श्रद्धा भाव जगे जब, मिल जाये नंदलाला ॥
यही मानव की है मानवता, रहे बोलबाला ॥ १ ॥

जीवन बने जब स्वावलंबी, टल जाये सब बला ।
अपने बूते पर गुजर करे, उसे कहदो भाग्यवाला ॥
यही सही है जिन्दगानी, पीर हरने वाला ॥ २ ॥

आप जिय दुनियाँ को सिखाये, लेवे ना किसी से बदला ।
तन त्यागकर कीर्ति रखी, रखा अमिट उजियाला ।
जैराम कहे मेरे मन भाये, जिगर दिलवाला ॥ ३ ॥

भजन क्र. २९ (तर्ज– गोरी तेरा गांव बडा प्यारा)

ले नाम का सहारा,
लगे नाँव किनारा, कोई ना भूले ॥
अपना हित परखले,
सही उसमें मिले, सोच समझले ॥ टेक ॥

जाना नही समय ज्ञान, कर्म अपने भूला ।
कब क्या करना कैसे रहना, ना समझे तो बला ऽ ऽ ऽ ।।
आये जैसा वक्त लेवे मूकाबला, वैसा ही चले ।। १ ।।

विद्या पढ़कर विद्वान होवे, आत्म तत्व न पाया ।
अनुभव की ना वाणी चलाया क्या खोया क्या पाया ऽऽऽ ।।
बके वेद वाणी, अधूरा ये ज्ञानीं, क्या सार मिले ।। २ ।।

पूछो साक्षियों से सिद्धबद्ध कैसे, भेद मिले उनसे ।
जीव भ्रम छुटे शिव भाव उठे, चाबीं ले ले गुरु से ऽऽऽ ।।
दशम द्वार खुले, अपना तू पाले, जैराम पद ना भूले । ३ ।

भजन क्र. ३० (तर्ज– गेला हरी कुण्या गावा)

किसान मेरा भोला भाला ।
अपने बल पर ही पला ।
सच्चा है ये भाग्य वाला, दाता अल्ला ।
दुनियाँ पालन वाला ।। टेक ।।

विश्व जीव पले बल पर, निर्भर रहे सभी उसपर ।
होवे न कहींपर हलचल, शांति वाला ।
दुनियाँ पालन वाला ।। १ ।।

रखे ना द्वेश भाव किसीसे, रहे वो अपने कामों से ।
मेहनत करे दिल मनसे, तारन वाला ।
वो है भोला भाला ।। २ ।।

सपूत मातृभूमी का, दुलारा है वो भगवान का ।
जैराम कहे वो हिम्मत का, प्रण ना भूला ।
दुनियाँ पालन वाला ।। ३ ।।

भजन क्र. ३१ (तर्ज– मुझे प्यारा भारत मेरा)

मेरा साथी ईमानदार, उससे ही मैं करता प्यार रे ॥ टेक ॥

नहीं किसी से लेना देना, फुकट नहीं किसी का खाना।
झूठ से है तक्रार रे ॥ १ ॥

अपने बलपर जीवित रहना, आप जगकर जग को जिलाना।
यही मेरा इकरार रे ॥ २ ॥

चाहे कोई धनी हो या ज्ञानी, गरीब हो चाहे कोई अडानी।
इससे नहीं दरकार रे ॥ ३ ॥

नीच ऊँच न मैंने जाना
सभी आत्मा को एक माना
देशी हो या विदेशी नर रे ॥ ४ ॥

जैरामदास कहे मानवतासे प्रीति।
उससे ही मुझको मिलती है शांति।
यही है मेरे तत्व का सार रे ॥ ५ ॥

भजन क्र. ३२ (तर्ज– मुझे प्यारा भारत मेरा

सच्चा न्याय ही तीर्थ कहलाये,
वही देश समाज को जिलाये ॥ टेक ॥

मानव की यही है झाँकी
जीवन सुन्दर ये लाने की।
ज्ञान की गंगा बहाये रे ॥ १ ॥

आदर्श जीवन श्रद्धा भावना,
पूर्ण करे सब मनोकामना ।
इससे द्वेष मिट जाये रे ॥ २ ॥

नीति हमको ये सिखलाये,
पाप कर्म से ये बचाये ।
प्राण जाये पर बचन निभाये रे ॥ ३ ॥

मानव सेवा ही ईशपूजा,
इसका ही तुम निभावो दावा ।
जैराम कहे देव बनाये रे ॥ ४ ॥

भजन क्र. ३३ (तर्ज- मेरी छोटी सी है नांव)

बदले जैसा जमाना, वैसा ही गावो गाना.
ये ही संतों का कहना, समय का ज्ञान तू धरले ॥ टेक ॥
जिसकी आमद होवे जैसी,
करे गुजारा उसमे वैसी ।
किसीका लेवो ना उधार, जीवन होवेगा सुधार ।
नीति यही निभाले ॥ १ ॥

सत्यता को ना तुम छोडो,
प्रेम भाव के नाते जोडो ।
बनो सभी इमानदार, मिटावो काला ये बाजार ।
ये हल चल सारी टले ॥ २ ॥

आप जियो दुनियाँ को जिलाओ,
ऐसा हो ज्ञान सबको सिखावो ।
रहे ना कोई अज्ञान, होवे समाज का उत्थान ।
तब सुख शांति मिले ॥ ३ ॥

तन धन और गुण,
तुम छोंडो इसका अभिमान ।
लेवे लींनता नम्रता, तभी आवे मानवता ।
भगवान सहज में मिले ॥ ४ ॥

धरले दृढ़ भाव रे मन में ।
खोज परमात्मा अपने तन में ।
येंही कहता जैरामदास टूटे भव बंधन ये फाँस ।
नाम हरी का भजले ॥ ५ ॥

भजन क्र. ३४ (तर्ज- सच्चे सेवक बनकर)

परिश्रम से सब कुछ मिले, कर्म से ये भाग्य खुले ।
नर संचित क्या देखते बैठा,
अलाली से कैसा चले ॥ टेक ॥

बोल बोल से हुवा झोल, शब्द का न तू किया मोल ।
घर में बच्चे भूखे रहते, गर्व गुमान का दिखावे तोल ।
जिम्मेदारी को न देखा, मानवता को गया भूल ॥ १ ॥

दूसरे बल पर करे गुजारा, ठगते जावे भोला भाला ।
छल कपट की नीति तेरी, ब्रम्ह ज्ञान को बकते चला ।
अपना अनुभव तूने न किया, तूझसे है ये पशु भले ॥ २ ॥

लाज शरम न तुझमें थोडी, आदत का है तू लाचार ।
डर ना तुझको ईश्वर का है, पाप पुण्य का नहीं विचार ।
दास जैराम कहता प्यारे सुकर्म से सद्‌गति मिले ॥ ३ ॥

भजन क्र. ३५ (तर्ज– ऐसा है नाम तेरा)

कर्तव्य पर अपने रखता है जो भरोसा ।
करे जो भी काम पावे ना वो निराशा ।। टेक ।।

कांहु के न लेने देने में, रहे वो मस्त धुन में ।
काम में मग्न रहे, पर धन की ना आशा ।। १ ।।

मिले जैसा उसको, उसमें ही खुश रहता ।
भाग्य में जो लिखा है, पाया हूँ जगदीशा ।। २ ।।

देखे न बुराई किसी की, होवे भलाई सबकी ।
एक ही आत्मा झाँकी, बाकी है सब तमाशा ।। ३ ।।

जैरामदास कहता, दाता वो मानवता का ।
नर जन्म पाकर उसने, रहा भृंग मकरंद जैसा ।। ४ ।।

भजन क्र. ३६ [धरती मेरी माता]

आज करे कष्ट, तो कल मिले सुख ।
यही है मानवता का, सच्चा रूप । टेक ।।

काम काज करे बिना, नही जीवन की शोभा ।
ईमानदारी के पथ पर, नित्य चलावे जुबाँ ।।
बने नीति नियम, मिटे सारी भूख ।। १ ।।

चन्दन खोड घिसे बिना, सुगन्धी ना आवे ।
पडा रहने से उसकी कीमत भी न होवे ।।
अनुभव करके देखो, कभी न होगा दुःख ।। २ ।।

स्वाभिमान से जीना सीखे, स्वाभिमान को त्यागे ।
युग युग जगी रहे, आत्म बोल तरंगे ।।
तुम्हे कोई ना भूले, चरित्र का रुप ।। ३ ।।

सुख दुःख ये जीवन साथी, इनसे ना घबराओ ।
जैरामदास कहे रे बाबा, समय देखते जावो ।।
सब कुछ वहीं पाये, राम नाम जिसके मुख ।। ४ ।।

भजन क्र. ३७ [तर्ज– जशोमती मैया से बोले नंदलाला]

दुखिया की बतियाँ, कौन सुन पाये ।
तोरे बिन कोई, नजर न आये । ।। टेक ।।

किसी का न हमको यहाँ सहारा,
कोई ना साथी यहाँ हमारा ।
खिसक रही हिम्मत, जिया घबराये ।। १ ।।

तुम हो सोना हम है सुहागा,
तुम बिन हमरा जीवन अभागा ।
पति बिन सति की शोभा ना आये ।। २ ।।

तुम हो सागर हम है नदियाँ ।
तुम हो वृक्ष हम है पत्तियाँ ।
धागे में जैसे फूल है पिरोये ।। ३ ।।

रैन की आभा चंदा बिन,
ऐसे ही मेरे बीते दिन ।
माया रोग नित्य सताये ।। ४ ।।

जैराम कहे तुम हो वैद्य नारायण ।
तेरे भरोसे हमारा जीवन ।
ऐसी दवा दो की रोग मिट जाये ॥ ५ ॥

भजन क्र. ३८ (तर्ज– गुरु कृपा कही)

साधु न कहलावे वेश भूषा से ।
ज्ञानी ज्ञान से पहिचाने ॥ टेक ॥

त्याग वैराग्य की वृत्ति होवे ।
शील नम्रता दिल में रखे ।
करुणा प्रेम की वाणी चलाते ।
समाज की उन्नति लाने ॥ १ ॥

घिसते रहें वो तन को अपने ।
दीन दुखियों के लिये ।
अपना पराया भेद छोडकर ।
सबको अपनाया उसने ॥ २ ॥

जिसको जो भी कमतरता हो ।
उसकी पूर्ति करता है ।
वो ही सबका दाता कहलाये ।
देवता उसको सब माने ॥ ३ ॥

कहता जैराम वही मानव है ।
दानवता को मिटाने को ।
हृदय परिवर्तन करके दिखाये ।
राम राज्य को लाने ॥ ४ ॥

भजन क्र. ३९ (तर्ज– सच्चे सेवक)

आज देश को सही जरुरत है।
मानव धर्म सिखाने की।
कालाबाजारी भ्रष्टाचारी
इनसे सबको बचाने की ॥ टेक ॥

रहने न पावे अलाल गुण्डे।
पाखण्डी के हथ कण्डे।
निगाह रखे ऐसे लोगों पर।
धर्म नीति बचाने को ॥ १ ॥

सट्टा, जुआ, शराब–खोरी।
व्यसन बढ गया भारी।
इज्जत लूटी जाती सज्जन की
भूले मान मर्यादा को ॥ २ ॥

आमद से ये खर्चा बढाया,
शान, शौकत के भूषण में,
घर में बच्चे भूखे मरते,
जरा फिकर नहीं है इनको ॥ ३ ॥

ज्ञानी धनी विद्वानों जागो।
देश भलाई के लिये।
कहता जैराम तभी मिलेगी।
सुखे शांति सब जीवों को ॥ ४ ॥

भजन क्र. ४० (तर्ज- आवो बच्चे तुम्हें दिखाये)

जाग उठो नव जवानों, भष्टाचार मिटाने को ।
देश धर्म की शिक्षा लेकर, समाज उन्नत करने को ।।
सत्यम् सुंदरम् ।। टेक ।।

बच्चे बूढे सबको, लेकर जिम्मेदारी निभानी है ।
इस वतन को उन्नत करने, कुरबानी भी करनी है
सतर्क रहें हम हर वक्त में,
दुश्मन से टकराने को,
सत्यम् सुंदरम् ।। १ ।।

साकार करना स्वप्न बापू का, हमारा तुम्हारा फर्ज है ।
उनके वचन का पालन करना, यही हमारा धर्म है ।।
आजादी की मशाल लेकर,
सब जीवों को जगानें की,
सत्यम् सुंदरम् ।। २ ।।

गरीब अमीर का भेद मिटाकर, समता से हमें चलना है ।
बन्धु भावना हृदय में ध रकर, मर्यादा को निभाना है ।।
हिन्द सांस्कृति सब कोई जानें ।
राम राज्य ये लानें को ।
सत्यम् सुंदरम् ।। ३ ।।

बिखरा हुआ समाज सारा, इसमें एकता लानी है ।
मानवना का पाठ सिखाकर, दैविक शक्ति भरनी है ।।
जैरामदास कहे रे बाबा ।
ऋण माता का हरने को ।
सत्यम् सुंदरम् ।। ४ ।।

भजन क्र. ४१ (तर्ज- साईनाथ दर्शनासी)

मानव आत्मा तेरा मीत है ।
उससे ही तेरी जीत है ।।
फिर सारा झूठ है,
तेरे जीवन का वो साथ है ।। टेक ।।

जो न जाने उसका मर्म, उसके फूटे है कर्म ।
दर दर की वो ठोकर खाये, सारी उमर व्यर्थ खोये ।।
उसके पीछे उठ बैठ है, यहाँ वहाँ परेशान है ।
मानव आत्मा ।। १ ।।

हित की बातें न जाने, प्रभु तत्व तू न पहिचाने ।
भूला है राही अनजाने, आया है तू देश बिराने ।।
वतन तेरा दूर है, और सफर लंबा चलना है ।
मानव आत्मा ।। २ ।।

भूल मत रे तू अज्ञानी, भरमा रही है मायारानीं ।
होगी यहाँ पर तेरी हानि, चेत जा रे तू प्राणी ।।
यह चोरों की नगरीं है, निज धन संभाले चलना है
मानव आत्मा ।। ३ ।।

आयेगा जब पिया परवाना, एक पल भी न होगा रहना ।
जैरामदास कहे जब हंसा, तन से हो जायेगा बिराना ।।
सत् कर्म ही तेरे साथ है, जो अंत मे पहुंचाते है ।
मानव आत्मा ।। ४ ।।

गरीबों का धन

भजन क्र. ४२ (तर्ज– तेरी मेरी शादी)

गरीबों का धन श्रम की कमाई,
धनियों ने लूट खाई है।
झूठ मूठ के फन्दे डालकर, अपनी सत्ता चलाई है। टेक ॥

रात दिन तन को घिसतें, चैन कभी न पाते।
चिन्ता में डूबे रहते, पेट के लिये घूमते ॥
चेहरे पर ना रौनक आई,
खिलती कली मुरझाई है ॥ १ ।

एक प्रभु का इन्हें सहारा, उसके बल पर करे गुजारा
परिस्थिति का है मारा, दुःख पीते रहे सारा।
नेकी पर ही चलता राही,
तकदीर को अजमाई है ॥ २ ॥

टूटी फूटी इनकी झोपडी, बदन पे ना चिन्दी।
बच्चे भूखे रोते है, और कण कण को तरसते है ॥
नयनों की धारा, ना रुक पायी
कैसा प्रभु तू न्यायी है ॥ ३ ॥

दीन दयालू दीना नाथ, तेरे जग में उल्टी बात।
कब तक चले ये उत्पात, करुण कहानी की सुन लो बात
जैरामदास कहे सुन सांई।
ऐसा कैसा निर्दयी है ॥ ४ ॥

भजन क्र. ४३

आज हमें पुरानी रूढियाँ, इसे बदल देना है ।
अन्ध श्रद्धा को छोड हमें नवयुग निर्माण करना है ।। टेक ।।

नवजवानों जाग उठो, देश धर्म के हित को परखो ।
कोई न रहने पाये अलाल, सबसे काम लेना है ।। १ ।।

निरक्षर को साक्षर बनाये, अंगूठा छाप कोई रहने न पाए ।
संतो के वचनों पर चलकर, जींवन बिताना है ।। २ ।।

समाज सुधरे तब देश सुधरेगा, संकट सारा मिट जायेगा ।
घर में स्वतंत्रता का राम राज्य लाना है ।। ३ ।।

अपनी अपनी जिम्मेदारी, रखकर दिल में ईमानदारी ।
चले हम सब नर नारी, बन्धु भाव निभाना है ।। ४ ।।

कुचलकरके भ्रष्टाचार, पडी हूई है फूट की दरार ।
अमीर गरीब का भेद मिटाकर, समता से चलना है ।। ५ ।।

आदर्श शादी कम खर्चों में, ना होवे ऋण हममे तुममें ।
सुविचार के कार्य कर, मानवता निभाना है ।। ६ ।।

जैरामदास कहे रे बाबा, आमद से खर्च न हो ज्यादा ।
निभाना है हमें ये वादा, सत्पथ पर चलता है ।। ७ ।।

भजन क्र. ४४ (तर्ज– कोई मतवाला आया)

जिस गाँव में होती है फूट ।
वहाँ गुण्डे को मिलती है छूट ।। टेक ।।

ग्राम में झगडे बनें रहते है ।
छुट पुट घटना घटती रहती है ।
क्रोध की ज्वाला पडे टूट ।। १ ।।

भ्रष्टाचारी का वहाँ बोलबाला।
न्याय वहाँ पर जाये कुचला।
सज्जन रोवे फूट फूट ॥ २ ॥

रात दिन ना चैन से रहते।
अपनी भलाई कभी न देखते।
पीछे पडे रहते है ये भूत ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे नीति नियम से।
टकराओ तुम पाजी लोगों से।
बनाकर अपना एक गुट ॥ ४ ॥

भजन क्र. ४५ (तर्ज-- मरदा है परदा)

माथे पे चन्दन है, माथे पे चन्दन है।
माथे पे चन्दन मुख में राम झूठ मूठ के करते काम।
संत धरम को किये बदनाम, भेष पे दुनिया मर जाती है ॥टेक॥

फैले ढोंगी इस कदर, नजर आते जिधर उधर।
भोले लोगों को फंसाये, जाल बिछाकर।
हुई है इनसे बरबादी, हरकते करते ये गंदी।
सच्चा भी कहलाये पाजी, लोगों में हुई है भ्रमबाजी।
लगे ना मन, इन राहों में, भजन पूजन इन भावो में।
ना आदर रखते, संतो के वचनों में।
लफंगो से विश्वास खोया, खिसकते चला धर्म का पहिया
नीति पैंसों से बेच दिया, सुखी अपना संसार किया ॥
ठगबाजी के करके कुकर्म ॥ १ ॥

बिगड रही है यहाँ, समाज में प्रेम कीं बातें ।
दया भावना और शांति करूणा के नाते ।
बडे को छोटा ना माने, अपने ही मारे वो ताने ।
अश्लीलता के गायें गाने, शराब पीकर दीवाने ।
नही इनको फिकर घर की होलीं हो गई इनके तन की ।
थोथी बातें बडबडाते पुराणों की ।

ये ऐसे गुरु भ्रम मे डोले,
भूले है अनीति में चेले ।
हमेशा प्रभु की जय बोले,
है कर्म मगर इनके ढीले ।
कहो वैसा चलो कहता जैराम ॥ २ ॥

भजन क्र. ४६ (तर्ज– पगले भजले हरी का नाम)

सच्चे को है मेरा साथ, करूं ना झूठे से बात ।
यही है यही है, मेरा सिद्धांत ॥ टेक ॥

दया धरम करुणा से प्रीति ।
शील नम्रता की हो नीति ॥
बन्धु भावना जगी हो जिसमें
चले नेकी से पिन रात ॥ १ ॥

मर्यादा सुकर्म की राहे
वो ही मेरे दिल को भाये,
अपने बल बूतों पर जिये
छोडकर पक्ष पात ॥ २ ॥

मिलन सार हो जिसकी वृत्ति
मति हमेशा ब्रम्ह में बहती
मानवता का हित दिखा दे
वो ही मेरा तात ।। ३ ।।

जैरामदास कहे पीर पराई, जानी उससे मेरी मिताई ।
ऐसे ही मेरे मित्र कहाये, सतगुण ही मेरी जात ।
यही है मेरा सिद्धान्त ।। ४ ।।

भजन क्र. ४७ (तर्ज– पर्दा है पर्दा)

वादे का बन्धन है, सत्य का काम ।
धर्म नीति पर करते विश्राम ।।
कर्म जिसके है निष्काम ।
उसकी बातें प्रभु सुनते है ।। टेक ।।

भक्तों की टेक निभाते, हर मुसीबत में साथ देते ।
लादकर उनके बोझ, चिन्ता से दूर करतें ।।
जटिल समस्या हल करे, मिटावे उनके सब दुखडे ।
निर्भयता से वो चले, जल में जैसा कमल खिले ।
करे चिन्तन वो आत्मा का ।
नियम संयम तत्व पाने का ।।
नियम सँयम तत्व पाने का ।।
चित्त ये चेतन बन जाये ।
दृढ भाव ये मन का ।।

निर्मल मन की भावना, बहे जैसे गंगा जमुना
बुद्धि में उत्साह लाना, ज्ञानकी झडियो मे तरना
हंसा पा जाये मोक्ष धाम।
कर्म का बन्धन ॥ १ ॥

भला सबका जो चाहता है, उस पर ही खुश विधाता है
जग में वो आकर, भव सिन्धु तरता है।
जनता जनार्दन सेवा, में, घिसा तन उस कामों में
देवे साथ सुख दुःख में, जुटा है वो परहित में
उज्वलता ये अंतर में, डूबा रहें लीनता में।
दया धरप करूना की वाणी चलावे।
सभी को शांति पहुंचाता, दिलासा सबको ही देता।
दूत है सत्य अहिंसा का, व्रत का है वो पक्का।
उसका जग में बोल बाला है।
कहता जैराम ॥ २ ॥

स मा प्त

भागवत प्रिंटिंग प्रेस, भिवापूर

[टि. हाऊस चौक]